IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 8, August 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118||| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

छायावादी काव्य में उन्मुक्त एवं वैयक्तिक प्रेम की अभिव्यक्ति

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा
सह आचार्य, हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी

शोध सारांश- छायावादी काल में जिस वैयक्तिक स्वच्छन्द प्रेम की भावना से पुरुष प्रभावित हुआ है उसे पाने का अधिकार उन्मुक्त एवं वैयक्तिक प्रेम की अभिव्यक्ति है। छायावादी काव्य लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति को प्रतीकात्मक रूप देने के लिये अधिक बाधित हैं। इस काव्य में प्रेम का स्वरूप लौकिक है अथवा अलौकिक इस सम्बन्ध में गहरा मतभेद पाया जाता है इसको मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अतृप्त कामवासना का परिणाम बताया गया है और सामाजिक दृष्टि से इसे सामाजिक बन्धनों में जकड़ी हुए भारतीय प्रेम के क्रन्दन को निरूपित कर रहस्यवादी दृष्टि से आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ा गया है। प्रेम का जीवन क्यों विरह तथा वेदना का जीवन बन जाता है-इसका अनुशीलन अभी अपेक्षित है। करती है।

KEYWORDS : छायावादी काव्य, प्रेम का जीवन उन्मुक्त एवं वैयक्तिक प्रेम, अभिव्यक्ति, रहस्यात्मकता, जीवन-दृष्टि

द्विवेदी-युग में 'इतिवृत्तात्मकता' थी। उसमें विषय की प्रधानता थी। इसलिए उसमें 'स्थूल-दर्शन' था। छायावादी कविता में 'सूक्ष्म सौन्दर्य की सत्ता स्थापित हुई।

कविता कवि के अपने राग-विराग को लेकर चलने लगी। इस प्रकार 'विषय' के स्थान पर 'विषयी' (कवि) को महत्व मिला। इससे कविता अन्तर्मुखी हो गई। शुक्ल जी के शब्दों में "छायावादी कवियों ने उन्मुक्त आत्माभिव्यंजन को प्रधानता दी। व्यक्तित्व का विकास हुआ। कवि का 'अहं' पुष्ट हुआ। वह अपने व्यक्तिगत संस्कारों, चिन्तन एवं कल्पना के आधार पर वस्तु के चित्रण में प्रवृत्त हुआ।[1]

छायावादी कवियों ने जीवन की विषमता, जटिलता, कठोरता तथा संकुलता को अभिव्यक्ति देने के लिये साहस एवं पलायन का परिचय दिया है, व्यक्ति-विरोधी मान्यताओं से विमुख होकर पहले निर्जन - प्रकृति में सन्तोष की साँस ली है और फिर धीरे-धीरे शक्ति-संचय करके रूढ़ियों के प्रति वैयक्तिक विद्रोह का शंखनाद किया है। इसलिये डॉ. नामवर सिंह ने छायावाद का मुल्यांकन करते हुए लिखा है-'आत्मकथा' उसके काव्य का विषय बन गया है और 'मैं' उसकी शैली। इस निजता एवं आत्मनिष्ठता के मूल में कवि का समग्र व्यक्तित्व और युग व्यक्ति-चिन्तन है।[2]

कविवर निराला ने खुलकर इस बात को कहा है कि- "मैने 'मैं' शैली अपनाई" - यह केवल शैली भर नहीं है, बल्कि इस आत्मीयता के पीछे आधुनिक युवक का 'पूरा व्यक्तित्व' है। वह अपने को व्यक्ति करने के लिए 'सामाजिक स्वाधीनता चाहता है। उसकी वैयत्तिकता पुरानी निर्वैयक्तिकता में घुट रही थी। निर्वैयक्तिकता में एकदम आत्म-निषेध की आशंका। यह वैयक्तिक अभिव्यक्ति कवि के लिए 'व्यक्ति की मुक्ति' थी। यह वैयक्तिकता का आग्रह एक बहुत बड़ा विद्रोह था। इसीलिए पुरानी मानसिकता के पंडितों ने इसकी कड़ी आलोचना भी की है। मध्य युग के भक्त कवियों- कबीर, मीरा, सूर, तुलसी के आत्मनिवेदनों तथा विनय के पदों में उन्होंने संपूर्ण तटस्थता का त्याग कर एकदम आमने-सामने बातचीत की है। उस युग में यह बहुत बड़ी बात थी।

आधुनिक युग के छायावादी कवियों की वैयक्तिक अभिव्यक्ति भक्तों के 'आत्म-निवेदन' से कहीं आगे की चीज है। भक्तों के आत्म निवेदन पर धर्म का आवरण या पर्दा था। लेकिन छायावादी कवियों की आत्माभिव्यक्ति में नई पीढ़ी ने 'धार्मिक-आवरण' को भी उतार फेंका। मध्ययुग की धार्मिकता का स्थान आधुनिक युग की 'ऐहिकता (भौतिकता) ने ले लिया। प्राचीन मर्यादा के रक्षकों

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

को यह बात कितनी अरूचिकर प्रतीत हुई यह उनके तत्कालीन विरोधों से ही प्रकट है। आचार्य द्विवेदी ने निरालाजी की 'जूही की कली' शीर्षक कविता अपनी 'सरस्वती' पत्रिका में नहीं प्रकाशित की और अनैतिक कह कर लौटा दिया।

प्राचीन कवि अपने निजि 'प्रेम-संबंध' को सीधे ढंग से प्रकट करने में हिचकते थे। सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, मर्यादाओं के चोंगे, मुखौटे या पर्दे को छायावादी नयी पीढ़ी के कवियों ने उतार फेंक दिया। वस, व्यक्ति ने अपनी अभिव्यक्तिकी 'स्वाधीनता' समाज से गांग ली। रीति-काल' के कवियों के लिए 'राधा-कन्हाई' की आड़ अनिवार्य थी क्योंकि 'सांमती' नैतिकता' का बंधन बड़ा कठोर था। लेकिन इस बंधन को अस्वीकार करते हुए छायावादी कवि पंत ने 'उच्छ्वास और आंसू की बालिका के प्रति सीधे शब्दों में अपना 'प्रणय' प्रकट किया। उसके विषय में कवि कहता है कि-

"बालिका मेरी मनोरम मित्र थी।"

कवि पंत ने समाज से छूट प्रथम बार ले ली और इसमें कवि कहीं भी अपने को 'अपराधी' या 'अनैतिक' अनुभव नहीं करता। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलता है। कविता में जहाँ देवी-देवताओं के प्रेम का वर्णन होता था, वह स्थान आधुनिक युग में साधारण मानव ने ले लिया है। डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में-

"यह जनतांत्रिक भाव की विजय है।

यह मध्यम वर्ग की प्रथम सामाजिक आजादी है।[3]

महाकवि 'निराला' ने अपने पुत्री 'सरोज' की स्मृति में 'सरोज-स्मृति' शोकगीत लिखा और अपने निजी जीवन की अनेक बातें साफ-साफ कह डाली- जैसे- मातृहीन लड़की 'सरोज' का ननिहाल में पालन-पोषण, उचित दवा-दारू के अभाव में सरोज का देहान्त, विवाह के लिए आने वाले 'प्रस्ताव को ठुकराना, संपादकों द्वारा रचनाओं का लौटाया जाना, सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए 'नए ढंग से कन्या का विवाह करना' कवि अपने कनौजिया बंधुओं पर प्रहार करता है।

"ये कान्यकुब्ज कुलांगार

खाकर पत्तल में करें छेद

इनके कर कन्या अर्थ खेद।"[4]

पुनः अपने कान्यकुब्ज वंशोत्पन्न 'दामाद' की अशिष्टता एवं मूर्खता का चित्र खींचते हैं-

"ये जो जमुना के से कछार

पद फटे निराई के, उधार

खाए के मुख ज्यों पिए तेल

चमरौधे जूते से सकेल

उन चरणों को मैं यथाअंध

पूजूँ ऐसी नहीं शक्ति।।[5]

'पन्त' और 'निराला' की तरह 'प्रसाद जी' ने 'आत्माभिव्यक्ति' की है। 'हंस' पत्रिका के 'आत्मकथा' अंक के लिए प्रेमचन्द जी के आग्रह पर 'कविवर प्रसाद' ने अपनी 'आत्मकथा' लिख डाली-

"तुम सुनकर सुख पाओंगे, यह गागर रीती"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

जिसके अरुण-कपालों की मतवाली सुंदर छाया में

अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में

उसकी स्मृतिपाथेय बनी है, थके पथिक की कथा की।

जीवन को उधेड़ कर देखोगे, क्यों मेरी कंथा की।"

(प्रसाद जी की 'आत्मकथा')

'थके पथिक की कथा' की जीवन को उधेड़ कर देखोंगे मेरी कंथा की " - कवि अपनी आत्म-कथा की जीर्ण-शीर्ण कथा (कथरी-गुदड़ी) कहता है और बताता है कि उसमें कुछ नहीं है।

ध्यातव्य है कि रूढ़िवादी 'पुरुष-प्रधान समाज' में जब एक पुरुष की यह स्थिति है, तो 'महादेवी वर्मा' की क्या दशा होगी, समझा जा सकता है। अपने सरस 'गीतों में इन्होंने वैयक्तिकढंग से अभिव्यंजना की। उसके लिए उन्हें बहुत 'प्रलाप' (बुरा-भला) झेलना पड़ा। आध्यात्मिक-प्रणय को 'भौतिक प्रणय' कहकर मजाक उड़ाया गया। परिणामतः उन्होंने 'सभा' या गोष्ठी' में कविता-पाठ ही बंद कर दिया। महादेवी जी का कथन है कि-

"आज का साहित्यकार अपनी प्रत्येक 'सांस' का इतिहास लिख लेना चाहता है।"

'छायावाद-युग' में आत्माभिव्यक्ति इतनी अधिक व्याप्त हो गई कि इस युग में 'आत्मकथा' लिखने की परम्परा सी चल पड़ी। गांधी, नेहरू, रवीन्द्रनाथ, श्यामसुंदर दास, वियोगी हरि, राहुल सांकृत्यायन आदि ने 'आत्मकथा' लिखी। ये आत्मकथाएँ इस युग की वैयक्तिक आत्माभिव्यक्ति की सूचक हैं।

आदिकाल से काव्य के लिये प्रेम का विषय तो शाश्वत है, परन्तु इसके प्रति कवि तथा युग की दृष्टि बदलती रही है। इसकी वस्तु में अन्तर आता गया है। इसलिये काव्य-विषय तथा काव्य-वस्तु में अन्तर को स्वीकार करना आवश्यक है। मैथिलीशरण गुप्त तथा पुनरुत्थान काल के अन्य कवियों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप उदात्त होने के अतिरिक्त लौकिक है. उस पर आध्यात्मिक आवरण डालने का प्रयास नहीं है। वह आत्मनिष्ठ होने की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ है, वैयक्तिक होने की अपेक्षा पारिवारिक उन्मुक्त होने की अपेक्षा नियन्त्रित है। इस नियन्त्रण को रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय आदि ने शिथिल करने का प्रयास अवश्य किया हैं। छायावादी कविता में विद्रोह की भावना ने प्रेम को उन्मुक्त एवं वैयक्तिक अभिव्यक्ति देने की प्रेरणा अवश्य दी है, परन्तु सामाजिक बन्धनों की कठोरता के फलस्वरूप इसे प्रायः संकेतात्मक प्रतीकात्मक तथा रहस्यात्मक वाणी मिली है। प्रसाद काव्य में अथ से इति तक प्रेम एवं सौन्दर्य का स्वर ध्वनित होता है। वास्तव में वे प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि हैं। प्रेम उनके काव्य-शरीर में आत्मा की तरह व्याप्त है। उनकी सभी कृतियों का यह प्रेम ही शक्ति और जीवन देता है। प्रेम और सौन्दर्य की भूमि पर ही उनके काव्य का महल निर्मित हुआ है। उनकी दृष्टि में कवि के लिये प्रेम के रहस्य को समाना जरूरी है। 'चन्द्रगुप्त' में एक स्त्री पात्र कहती है-"आह सखी! तुम तो कवि हो। तुम तो प्रेम करना जानती हो और जानती हो उसका रहस्य।" प्रेम पथिक (1909ई.) प्रसाद का प्रथम प्रेम काव्य है। इसमें कवि ने प्रेम का उदात्तीकरण किया है। कवि का प्रेम व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति प्रेम न होकर आत्मा का विश्वात्मा के प्रति प्रेम हो जाता है। 'आँसू' (1925 ई.) प्रेम की मधुर स्मृतियों की अभिव्यंजना करने वाला प्रसिद्ध काव्य है। इसमें प्रसाद की संकोचहीन आत्माभिव्यक्ति देखी जा सकती है। एक प्रेमी कवि की पीड़ा, कसक, आकाँक्षा और उसका मादक प्रेम इस काव्य में व्यक्त हुआ है-

अभिलाषाओं की करवट

फिर सुप्त व्यथा का जगना

सुख का सपना हो जाना

भीगी पल्कों का लगना।।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118||| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

x x x x x

जल उठा स्नेह, दीपक सा

नवनीत हृदय था मेरा

अब शेष धूम रेखा से

चित्रित कर रहा अँधेरा।

x x x x x

वेदना विकल फिर आई

मेरी चौदहों भुवन में

सुख कहीं न दिया दिखाई

विश्राम कहाँ जीवन में।[6]

'झरना' (1918 ई.). 'आँसू' और 'लहर' (1933 ई.) के गीतों में प्रेम ही प्रधान है। ये गीत मानव और प्रकृति के प्रति सवानुभूति की तन्मयता के गीत हैं। इन गीतों में एक प्रेमी हृदय की आकाँक्षा, उत्कण्ठा, मिलन, वियोग और समर्पण देखा जा सकता है।

प्रसाद जी ने "सौन्दर्य को चेतना का उज्ज्वल वरदान मानकर उसे आध्यात्मिकता से सम्पृक्त कर दिया है-

"उज्ज्वल वरदान चेतना का

'सौन्दर्य' जिसे सब कहते हैं।

जिसमें अनंत अभिलाषा के,

सपने सब जगते रहते हैं।।"[7]

प्रसाद ने सौन्दर्य की समस्त बाह्य और आन्तरिक विशेषताओं के साथ उसकी परिभाषा प्रस्तुत की। अन्त में उनका कहना है कि सौन्दर्य चेतना का उज्ज्वल वरदान है। जिसमें अभिलाषा के अनन्त सपने जगते रहते हैं। रूप में प्रवाहित विद्युत की प्राणमयी धारा उसका जीव-तत्व है, तो नेत्रों के लिए आनन्ददायक रमणीय रूप उसकी अभिव्यक्ति है। उससे मन का रसमय और शीतल होना अनुभूति का पहलू है। प्रसाद की यह आध्यात्मिक सौन्दर्य भावना व्यक्तिनिष्ठ और नैसर्गिक ही नहीं कल्पना से रंगीन भी है। मन की भावना, प्रकृति और कल्पना तीनों उसके उद्गम स्त्रोत और उसकी प्रकृति एवं स्वरूप के निर्धारक हैं।

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ उपयोगितावादी दृष्टि से परे उसकी सौन्दर्य भावना का विकास भी होता जाता है-

जीवन का कोमल तन्तु बढ़े तेरी ही मंजुलता समान,

चिर नग्न प्राण उसमें लिपटें सुन्दरता का कुछ बढ़े मान।[8]

छायावादी- सौन्दर्य में सूक्ष्मता, सात्त्विकता एवं अतीन्द्रयता है, जबकि रीतिकालीन कवियों के सौन्दर्य-चित्रण में 'मांसल' स्थूल-सौन्दर्य का वर्णन है। 'कामायनी' में नायिका 'श्रद्धा' के 'सौन्दर्य' का चित्रण करते हुए महाकवि 'प्रसाद' कहते हैं कि 'उसकी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

शरीर की रचना फूलों के सुगंधित 'पराग' के 'परमाणुओं' अर्थात् पीले सुगंधित छोटे-छोटे कणों से की गई है यहाँ पराग की पीत आभा श्रद्धा के कान्तिमान गौर वर्ण को और 'मकरन्द' उसकी मस्ती तथा मादकता को व्यक्त करता है-

कुसुम कानन अंचल में मंद,

पवन- प्रेरित सौरभ साकार।

रचित परमाणु पराग शरीर,

खड़ा हो ले मधु का आधार।।[9]

छायावादी कवि आन्तरिक सौन्दर्य पर भी बल देते हैं। श्रद्धा का शरीर बाहर से तो सुन्दर है ही, उसका हृदय 'दया', 'मया', 'ममता', 'स्नेह', 'माधुर्य एवं 'विश्वास' आदि गुणों से युक्त है-

"दया, मया, ममता, लो आज

मधुरिमा का अगाध विश्वास।

हमारा हृदय रस निधि स्वच्छ,

तुम्हारे लिए खुला है पास।।"[10]

नारी अपने अन्तःकरण में स्थित 'प्रेम', 'तयाग', दया, तथा 'माधुर्य' आदि सद्गुणों से पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। यही आन्तरिक गुण स्त्री का अन्तस्थ 'सौन्दर्य' है। नारी 'श्रद्धा' स्वरूपा' विश्वासमयी एवं माधुर्य की साकार प्रतिमूर्ति है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,

विश्वास- रजत नग पग-तल में।

पीयूष श्रोत सी बहा करो,

जीवन के सुन्दर समतल में।।"[11]

श्रद्धा के मुख पर, लाल अधरों पर, उसकी 'मुस्कान' ऐसी लगती है जैसे सूर्य की दूर से आती हुई प्रातः कालीन 'किरण' एक रक्तिम कोमल किसलय को पाकर उस पर विश्राम की मुद्रा में अलस भाव से लेटी हुई है-

"और उस मुख पर वह मुस्कान,

रक्त किसलय पर ले विश्राम।

अरुण की एक किरण अम्लान,

अधिक अलसाई हो अभिराम।।[12]

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी इस 'भाव-चित्र' के सौन्दर्य' पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि—"यह बिम्ब या 'भावचित्र' कई तत्त्वों से निर्मित हुआ है। यह उसकी 'ताजगी', 'सूक्ष्मता', 'अलस-भाव' और 'मुख- सौन्दर्य' सब मिलकर एक संश्लेष बन जाते हैं।[13]

पन्त जी का सौन्दर्य-वित्रण- कविवर पन्त प्रकृति-सौन्दर्य' के कुशल चितेरे कहे जाते हैं। प्रकृति-सुन्दरीके अद्भुत सौन्दर्य पर विमुग्ध होकर, 'नारी सौन्दर्य' की उपेक्षा करते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118||| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,

तोड़ प्रकृति से भी माया।

बाले, तेर बाल- जाल में,

कैसे उलझा दूँ लोचन।।"

आगे चल कर पंत जी 'नारी' को स्वर्गीय सुषमा से विमंडित मानते हुए कहते हैं-

"तुम्हारे छूने में था प्राण,

संग में पावन गंगा-स्नान।

तुम्हारी वाणी में कलयाणि,

त्रिवेणी की लहरों का गान।।"

कविवर पंत 'प्रकृति' में 'नारी-सौन्दर्य' के दर्शन करते हैं- सन्ध्यारूपी नववधू पृथ्वी पर किस प्रकार मंथर गति से आती है। इसका एक मोहक चित्र द्रष्टव्य है-

"कौन तुम रूपसि कौन

व्योम से उतर रही चुपचाप,

छिपी निज छाया छवि में आप

सुनहला फैला केश कलाप

मधुर, मंथर, मृद मौन।।"

पंत जी ने पहले भले ही 'प्रकृति को अपूर्ण सुन्दरी' माना हो, किन्तु बाद में 'मानव' को सबसे सुन्दर सुन्दरतम मानते हैं-

"सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर,

'मानव' तुम सबसे सुन्दरतम।।"[14]

इनके काव्य में प्रेम का स्वरूप इनकी नारी कल्पना के समान प्रायः पावन, उदात्त, वायवी, स्वप्निल, कल्पनामय तथा प्रकृतिमय है। इसकी गहरी अनुभूति तथा सहज अभिव्यक्ति 'उच्छ्वास', आँसू की बालिका' तथा 'ग्रन्थि' में उपलब्ध होती है। 'वीणा' में कवि जहाँ किसी किशोरी के केशपाश में अपने लोचन उलझाने के लिये तैयार नहीं है 'ग्रंथि' में वहाँ उसकी आत्मा भी नारी प्रेम में इतनी उलझ जाती है। कि असफल प्रेम की सघन वेदना उसके व्यक्तित्व को अस्त-व्यस्त कर देती है इस खण्ड-काव्य में कवि ने सामाजिक बन्धनों पर कठोर आघात किया है जो नारी-पुरुष के सहज एवं पुनीत प्रेम को पनपने नहीं देते। इस प्रेम का स्वरूप कैशोर है जिसका चित्र 'मनोरम मित्र' में अंकित है। पंत वस्तुतः कल्पना-प्रधान कवि हैं। इसलिये इनके काव्य में रतिभाव न तो प्रसाद की मधुचर्या से युक्त हैं और न ही निराला के उद्दाम आवेग से उद्वेलित है। इनका प्रेम नारी की कोमलता, सुकुमारता तथा संयम के कारण भड़कता नहीं है, सुलग कर रह जाता है। इसलिये इसे स्त्रैण प्रेम की संज्ञा से मंडित करना असंगत न होगा। निराला के उद्दाम आवेग का परिचय 'जूही की कली' में ही मिल जाता है जब समीर अधीर होकर जूही की कली को जगाने के लिये उसकी पंखड़ियों को मसल देता है। नायक द्वारा नायिका के देह का झकझोरा जाना उद्दाम आवेग का ही द्योतक है। नायक के पौरुष के लिये नायिका की उपेक्षा असहनीय है। निराला की 'शेफालिका' में भी प्रणय की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष रूप में उभरती है। प्रेम के प्रति कवि के दृष्टिकोण का परिचय 'राम की शक्ति पूजा', 'तुलसीदास', 'सरोज-स्मृति' आदि रचनाओं में उपलब्ध होता है। 'राम की शक्ति

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108138|

पूजा' में एक ओर 'नयनों का नयनों से गोपन- प्रिय-सम्भाषण, पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन है और दूसरी ओर 'तुलसीदास' में वासनामय प्रेम का उदात्तीकरण है। 'सरोज-स्मृति' में प्रेम वात्सलभाव की अभिव्यंजना कवि के साहस तथा विद्रोही व्यक्तित्व का परिणाम है। निराला के काव्य में व्यक्तिगत प्रेम की परिणति समष्टिगत करुणा में होती हैं इसी प्रकार महादेवी के काव्य में प्रेम की जो पीड़ा व्यक्त हुई है वह गहन एवं अनुपम हैं और कठोर रूढ़ि-बन्धनों में जकड़ी हुई भारतीय नारी का क्रन्दन है। इसलिए शिवदान सिंह चौहान इनके वेदना के गीतों में सामाजिक वेदना की अनुगूँज सुनते हैं। छायावादी काल में जिस वैयक्तिक स्वच्छन्द प्रेम की भावना से पुरुष प्रभावित हुआ है उसे पाने का अधिकार नारी को भी है, परन्तु वह सामाजिक बन्धनों से अधिक ग्रस्त होने के कारण स्वच्छन्द प्रेम को अभिव्यक्ति देने में अधिक विवश है। इसलिए महादेवी में चीत्कार एवं क्रन्दन का स्वर अधिक तीव्र है। वह लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति को प्रतीकात्मक रूप देने के लिये अधिक बाधित हैं। इनके काव्य में प्रेम का स्वरूप लौकिक है अथवा अलौकिक इस सम्बन्ध में गहरा मतभेद पाया जाता है इनके दुःवाद को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अतृप्त कामवासना का परिणाम बताया गया है और सामाजिक दृष्टि से इसे सामाजिक बन्धनों में जकड़ी हुई भारतीय नारी के क्रन्दन को निरूपित किया गया है, रहस्यवादी दृष्टि से आध्यातिमक अनुभूति से जोड़ा गया है। प्रेम का जीवन क्यों विरह तथा वेदना का जीवन बन जाता है इसका अनुशीलन अभी अपेक्षित है। उठे हुए जीवन में मीरा तथा गिरधर, कबीर तथा साहब और लौकिक जीवन में लैला और मजनूँ के प्रेम में अन्तर नहीं रह जाता। इसी प्रकार का प्रेम महादेवी तथा उनके चिर सुन्दर में उपलब्ध होता है इसलिये महादेवी के काव्य में प्रेम की अभिव्यक्ति माधुर्य-भाव से युक्त है। महादेवी के प्रेम में गोपियों की छेड़-छाड़ या हास-परिहास का अभाव है। इसका स्वरूप अत्यन्त गम्भीर एवं उदात्त है। इस गम्भीर एवं उदात्त प्रेम की अभिव्यक्ति अन्य छायावादी कवियों की रचनाओं में भी मिल जाती है, परन्तु इसमें सूक्ष्मता, एकरसता, एकतानता, रहस्यात्मकता आदि इसकी निजी विशेषताएँ हैं। इसके मूल में महादेवी की सौन्दर्यवादी तथा स्वच्छन्दतावादी जीवन-दृष्टि है। जौ वैयक्तिक अनुभूति के तल पर प्रेम की विविध स्थितियों को वाणी देती है। यह जीवन-दृष्टि छायावादी प्रेम के सवरूप को निरूपित करती है।

इस जीवन-दृष्टि से छायावादी नारी का स्वरूप तथा प्रकृति-चित्रण भी निरूपित है। छायावादी कवियों की कृतियों में जिस प्रकार प्रेम के स्वरूप तथा उसकी अभिव्यक्ति में सूक्ष्म अन्तर पाया जाता है, उसी प्रकार उनकी नारी कल्पना तथा प्रकृति-चित्रण में भी सूक्ष्म भेद पाया जाता है। यह अन्तर गुणात्मक न हो कर व्यक्तिगत संस्कारों तथा अनुभूतियों का परिणाम है। प्रसाद, निराला तथा पंत के लिये नारी श्रद्धामयी, कल्पनामयी, अप्सरामयी, आदर्शमयी, प्रेरणामयी आदि है। इसलिये छायावाद की अधिकांश रचनाओं में नारी सौन्दर्य की अवतारणा इनके व्यक्ति-चिन्तन तथा आदर्शवादी दृष्टि से प्रभावित है। इसी प्रकार प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी ने प्रकृति के प्रायः दिव्य तथा चेतनामय स्वरूप को ही निखारा है। इसकी अनुभूति तथा अभिव्यक्ति में सूक्ष्म अन्तर के होते हुए भी इन कवियों का सौन्दर्य-बोध लगभग समान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 396
2. डॉ. नामवर सिंह- 'छायावाद' पृ. 18
3. वहीं पृ.-22
4. सरोज स्मृति पृ. 85
5. वही पृ.85
6. आँसू
7. कामायनी (लज्जा सर्ग)
8. वही (काम सर्ग)
9. वही (श्रद्धा सर्ग)
10. वही (श्रद्धा सर्ग)
11. वही (लज्जा सर्ग)
12. वह (श्रद्धा सर्ग)
13. प्रो. रामस्वरूप चतुर्वेदी (साहित्य और संवेदना का विकास) पृ. 138
14. सुमित्रानंदन पंत 'गुजन'

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com